डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamScanner

(1) प्रश्न - राजपूतों की उत्पति के विभिन्न सिद्धान्तों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - दसवीं शताब्दी के उत्तार्द्ध तथा ग्यारहवी शताब्दी के प्रारम्भ में अनेक स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ, जिसे राजपूत राज्य के नाम से जाना जाता है। राजपूतों की उत्पति के संबंध में अनेक विद्वानो ने अलग - अलग मत दिये है। कुछ विद्वानों ने इन्हें विदेशी कहा है तो कुछ विद्वान इनकी उत्पति को अग्निकुंड से संबंधित मानते है। और कुछ ने इन्हें ब्राह्मण जाति से उत्पन्न माना है।

(1) राजपूतों की विदेशी उत्पति - अनेक यूरोपीय तथा कुछ भारतीय विद्वानों की यह मान्यता है कि राजपूत भारत के मूल निवासी नही थें, बल्कि वे विदेशी थें। कर्नल टॉड के अनुसार वे कुसान तथा हुनों की संतान थें। दूसरी ओर V.A Smith भी उन्हें विदेशी मानते थें। उनका कहना है कि गुर्जर जो राजपूत होने का दावा करते थें वे हूनों के साथ ही भारत आये थें। इन विदेशियों को द्वितीय श्रेणी के क्षत्रिय के रूप हिन्दु समाज में समाहित कर लिया गया और बाद में चलकर यही क्षत्रिय राजपूत शासकों के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इतना ही नही बल्कि ईश्वरी प्रसाद भी राजपूतों को विदेशी ही मानते है। लेकिन कुछ विद्वानों का यह कहना है कि महाभारत में हूनों का उल्लेख तो मिलता है, लेकिन हमे गुर्जरों का उल्लेख कही नही मिलता है। ऐसी स्थिति में मैं कैसे मान लू की राजपूत विदेशी थें।

लेकिन हर्ष चरित्र में दोनों का जिक्र अलग अलग हुआ है। वस्त्र एवं रीतिरिवाज के आधार पर राजपूतों को विदेशी मानना सही प्रतीत नहीं होता।

(ii.) अग्निकुंड का सिद्धांत - राजपूतों की उत्पत्ति से संबंधित दूसरी मान्यता यह है कि राजपूतों का जन्म यज्ञकुंड से हुआ था। इस क्रम में चन्दबरदायी ने "पृथ्वीराजरासो" में राजपूतों का उत्पत्ति से संबंधित एक कथा का उल्लेख किया गया है। धर्म की सुरक्षा के लिए ब्रह्मा जी की आज्ञा से आबू पर्वत पर विश्वामित्र, गौतम और अगत्सग ऋषि - मुनियों ने यज्ञ प्रारम्भ किया। लेकिन दैत्यों ने इस यज्ञ को भंग करने का प्रयास किया। ऐसी स्थिति में दैत्यों से सुरक्षा के लिए विशिष्ट मुनि ने पुनः एक नये यज्ञ-कुण्ड का निर्माण किया और उससे चाहमान (चौहान को उत्पन्न किया। इन्होंने दैत्यों को पाताल-लोक तक खदेड़ दिया। विद्वानों ने कहा है कि इन विदेशी जातियों को अग्नि द्वारा शुद्ध कर राजपूत का दर्जा दिया गया।

(iii.) देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त - अनेक विद्वानों ने राजपूतों की उत्पत्ति को देशी माना है, तथा उनका सम्बन्ध प्राचीन क्षत्रिय वंश ब्राह्मणों से जोड़ने का प्रयास किया है। कुछ इतिहासकारों ने राजपूतों को वैदिक ऋषियों के रूप में माना है। अनेक राजपूत राजाओं के अभिलेखों में अनेक सूर्यवंशी या चान्द्रवंशी से संबंध बतलाये गये हैं। ये विद्वान प्रतिहार

P.T.O.

Scanned with CamScanner

राष्ट्रकूट, सिसोदिया तथा चालुक्य का संबंध राम और कृष्ण से मानते हैं। दूसरी ओर डॉ दशरथ शर्मा, विशम्भर शरण पाठक जैसे अनेक विद्वानों ने राजपूत जाति की उत्पति ब्राह्मणों से मानी है। गुप्त साम्राज्य और वर्द्धन साम्राज्य के पतन के बाद अरबों के आक्रमण से फैली अव्यवस्था सुरक्षा के लिए उन्होंने शास्त्र के स्थान पर शस्त्र का सहारा लिया और प्राचीन क्षत्रिय वंशों से अपना संबंध जोड़ा और यहीं शस्त्र धारण करने के फलस्वरूप बाद में चलकर यह राजपूत कहलाने लगें। बाद में चलकर ~~यह राजपूत~~ आर्यों के आने से उनमें राजनीतिक चेतना विकसित हुई। क्षेत्र विशेष में राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर के क्षत्रिय बन गये तथा उसका वंश राजपूत वंश के नाम से जाना जाने लगा।

इन सभी सिद्धांतों के अतिरिक्त प्रो० B.D. चट्टोपाध्याय ने राजपूतों की उत्पति का संबंध अनेक नवीन जातियों की संरचना, इच्छुक वंशों का उदय सामाजिक संबंधों में स्थानीयता पर बल आदि कारणों से माना है। जो भी हो लेकिन इतना तो सर्वदा सत्य है कि राजपूतों का उदय ब्राह्मणों के आदर्शों का अपनाकर हुआ। इनमें सबसे प्रमुख राजवंश गुर्जर प्रतिहारों का था। छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हरिश्चन्द्र नामक एक ब्राह्मण ने इस वंश की स्थापना की। परन्तु आगे चलकर

P.T.O.

उन्होंने अपना संबंध ब्राह्मणों से जोड़ा। इस वंश ने आठवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ~~मिर्जापूर की पहाड़ियों~~ पूर्वार्द्ध तक उत्तरी भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस साम्राज्य के अवशेषों पर ही अन्य प्रमुख राजपूत वंशों का उत्थान हुआ। इनमें प्रमुख राजवंशों का उल्लेख निम्नलिखित है —

गहरवाल वंश - गहरवालों का राजनीतिक उत्कर्ष ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में मिर्जापूर की पहाड़ियों में हुआ। इसका संबंध राष्ट्रकूटों और कौशाम्बिक के चन्द्रवंशीय क्षत्रियों से है। उसने सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तथा कन्नौज खोया हुआ गौरव पुनः स्थापित किया। जयचन्द्र इस वंश का अन्तिम महान शासक था। इसी के निमंत्रण पर मो० गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण कर उसे तराइन के युद्ध में पराजित किया। इसके बाद गौरी ने कन्नौज पर आक्रमण किया। बाद में चलकर इल्तुतमिश ने तुर्की सत्ता की स्थापना कर गहरवाल वंश को समाप्त ही कर दिया।

चौहान वंश - चौहान वंश की बहुत सारी शाखायें है। लेकिन सातवीं शताब्दी में वासुदेव द्वारा स्थापित शाकम्भरी जो कि अजमेर के पास है इसकी मुख्य शाखा है। इस वंश के प्रारम्भिक प्रसिद्ध शासक गुर्जर प्रतिहारों सामन्त के रूप में राज्य करते थे।

Scanned with CamScanner

सिंहराजने चौहान राज्य का काफी विस्तार किया। तथा महाराजाधिराज की भी उपाधि ग्रहण की। इसी वंश का एक शासक अजैयराज था जो अजैय शहर को बसाया था। चौहानों की शक्ति का सबसे अधिक विस्तार विग्रह राज के समय में हुआ। इस समय उन्होंने दिल्ली और झांसी पर अपना अधिकार कर लिया था उसका राज्य पंजाब, राजपुताना और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक विस्तृत था। सोमदेव ने उसी के सम्मान में ललित विग्रह राज्य (ललित विग्रह राज्य नाटक की रचना की थी)। इस वंश का अंतिम और विख्यात राजा पृथ्वीराज तृतीय था। बाद में चलकर मो० गौरी ने इसे पराजित कर इसे बंदी बनाकर बाद में उसकी हत्या करवा दी। तुर्कों ने दिल्ली एवं अजमेर पर अधिकार कर इस वंश की शक्ति को समाप्त ही कर दिया।

परमार वंश - इसवी शताब्दी में गुर्जर प्रतिहारों की शक्ति के पतन के बाद मालवा में परमार वंश का उदय हुआ। इस वंश का ~~संस्थापक~~ संस्थापक उपेन्द्र था। उसने चालुक्य नरेश को कई बार पराजित किया। परमार राज्य की सभी क्षेत्रों में उन्नति हुई। इसका सबसे महान राजा भोज था। उदयपुर प्रशस्ती से हमें यह ज्ञात होता है कि इन्होंने गुर्जर राजाओं से युद्ध किये थे। इस क्रम में उन्होंने तुर्की को पराजित भी किया था।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

इस प्रकार निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि राजपूतों की उत्पति के संबंध में विद्वानों ने अनेक विचार व्यक्त किये हैं। लेकिन इतना तो सर्वदा सत्य है कि, इनकी उत्पति जहाँ से भी हुई हो लेकिन इन्होंने लंबे समय तक तुर्क आक्रमणकारीयों को भारत पर आक्रमण करने से रोके रखा। लाख कोशिश करने के बावजुद भी भारत पर अधिकार नहीं कर सका।

अतः प्राचीन भारतीय इतिहासों में राजपुतों की उत्पति की सिद्धांत का महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित है, जिसे नकारा नहीं जा सकता।

THE END